

तणामयं कायः क्षीयमाणो न लक्ष्यते Hit. IV, 63. PAÑKAT. I, 181. 183, 21. प्रत्यामन्नविपत्तिमूढमनसो प्रायो मतिः क्षीयते II. 4. क्षीयते ऽखिलभूषणानि BHART. 2, 16. पथिकस्तथापि किमपि ध्यायन्मुहुः क्षीयते AMAR. 93. VET. 33, 16. — partic. praet. pass. तित् und क्षीण P. 6, 4, 60. 61. 8, 2, 46. VOP. 26, 87. 88. 128. 1) तित् erschöpft, ausgebeutet: यद्यो पुत्रः पितरं तित् उ-
पधावति TS. 6, 3, 10, 2. geschwächt, heruntergekommen: तितो ऽयं तप-
स्वी P. 6, 4, 61, Sch. Vgl. अतित fgg. und तितायुस्. — 2) क्षीणं vermin-
dert, erschöpft, hingeschwunden, zu Ende gegangen; vom abnehmenden
Monde ÇAT. Br. 2, 4, 2, 7 (ebend. घनीण). BHART. 2, 84. PAÑKAT. V, 90.
क्षीणे प्राणे ÇVETĀÇV. UP. 2, 9. क्षीणैः क्लेशैः 1, 11. क्षीणलोकाः MUṆḌ. UP.
1, 2, 9. मुक्त M. 3, 19. सुच. 1, 260, 2. 313, 17. 20. वृत्तं क्षीणफलं त्यजति
विहगाः PAÑKAT. II, 102. क्षीणस्त्रेहस्य दीपस्य DAÇ. 2, 68. जराक्षीणेन्द्रिय
Hit. I, 103. अग्नौ सुवर्णमक्षीणम् verliert nicht an Gewicht JĀG. 2, 178.
क्षीणायुस् MBh. 13, 6666. ऽक्षीवित R. 3, 7, 11. 5, 41, 28. ऽवृत्ति M. 8, 341.
क्षीणार्थं MĀKĪH. 7, 24. क्षीणेषु वितेषु Hit. I, 66. ऽबल PAÑKAT. I, 244.
सुच. 1, 33, 11. दोषाः क्षीणा वृक्षयित्याः 2, 184, 11. 1, 9, 21. 117, 3. 118,
12. 14. ऽशोणितमोस 121, 2. ऽशाय KATHĀS. 3, 128. मयि क्षीणोपाये AMAR.
21. R. 1, 22. RĪGĀ-TAR. 5, 60. 165. 287. AK. 1, 2, 4, 3. 3, 4, 25, 90. geschwächt,
heruntergekommen: क्षतक्षीण सुच. 1, 34, 20. 153, 11. 167, 19. संतोक्ष्वा-
सिनं क्षीणं नरं तपयति ज्वरः 120, 21. क्षीणतपविषातं 76, 20. पोषितप्रस-
ङ्गात्क्षीणानाम् 2, 133, 14. क्षीणस्य चैव क्रमशो देवात्पूर्वकृतेन वा M. 7, 166.
यः क्षीणं क्षीणं पुनर्भवम् अनुद्विग्नः करोत्येव सूर्यश्चन्द्रमसं यथा PAÑKAT. III,
68. आधि^० DAÇAK. in BENF. Chr. 184, 7. क्षीणा ऽयं तपस्वी P. 6, 4, 61, Sch.
8, 2, 46, Sch. mager, dünn, schwächlich H. 449. तेजोगुणादात्मनः संस्का-
रोऽस्तिष्ठितो महामणिरिव क्षीणो ऽपि नालक्ष्यते ÇĀK. 133. मध्यः क्षीणतरः
58, v. l. umgekommen MBh. 2, 972.

— caus. vernichten, zu Grunde richten, ein Ende machen, aus dem
Wege räumen, wegschaffen, übel mitnehmen; 1) तपयति, partic. तपित
(nur dieses zu belegen): दुर्योधनेन पृथिवी तपिता MBh. 14, 56. वनैकदेशः
तपितः R. 5, 30, 3. MECH. 34. तपिता अनयान्ये ऽपि नृपास्ते ते मृगा इव (अ-
नया d. i. मृगया) KATHĀS. 21, 28. यज्ञतपितकल्मषाः (v. l. तपित) BHAG.
4, 30. चन्द्रेण तपिततमसा ad ÇĀK. 78. भूभारः तपिता येन BHĀG. P. 1, 13,
35. 3, 3, 14. — 2) तपयति: तपयिष्यति ते रिपून् MBh. 3, 13162. 1, 4128.
KATHĀS. 19, 108. संतोक्ष्वासितं क्षीणं नरं तपयति ज्वरः सुच. 1, 120, 21.
11. वैदेही वत मे प्राणान् शोचन्ती तपयिष्यति R. 2, 12, 69. अक्षरात्राणि
गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह । आयूषि तपयत्यामुं ग्रीष्मे जलमिवोशवः ॥
103, 18. (अशनिना) तपिता लता RAGH. 8, 46. यः — इदम् — असृजद्विभर्ति
भूयः तपयति BHĀG. P. 4, 24, 61. 8, 7, 32. पृथिव्याः स वै गुरुभरं तपयन् 9,
24, 66. यदादिष्टं भगवता — तद्गुरुं प्रसक्तानां प्रायशः तपितम् 4, 31, 6.
WIND. SANCARA 123. ममापि च तपयतु नीललोहितः पुनर्भवम् ÇĀK. 194.
PAÑKAT. 56, 2. एनः तपयति Sch. zu KĀTJ. ÇR. 1, 2, 18. BHAG. 4, 30, v. l.
(शायम्) तत्र तपयिष्यसि MBh. 3, 1874. स तथैव लुधाविष्टः — तपयामास
तं कालं कच्छप्राणः brachte zu Ende 14, 2720. कामं तु तपयेद्देहं पुष्प-
मूलफलैः herunterbringen, schwächen M. 5, 157. MBh. 1, 1658. KUMĀRAS.
5, 29. med. MBh. 1, 1838. DAÇAK. 163, ult. — 3) तपयति AV. 12, 3, 51.

— अनु, pass. nach und nach schwinden: अनुक्षीयमाणविज्ञान BHĀG. P.
5, 14, 21.

— अप aufreiben, zu Ende bringen: एवंविधैर्दोरात्रैः कालगतयोपल-

II. Theil.

क्षितिः । अपक्षितमिवास्यापि परमायुर्वयःशतम् ॥ BHĀG. P. 3, 11, 32. अपक्षि-
त्य, अपक्षीय VOP. 26, 216, v. l. — pass. abnehmen (vom Monde): अमुम-
पक्षीयमाणमन्वपक्षीयते TS. 3, 3, 2, 3. ÇAT. Br. 1, 6, 2, 24. 7, 2, 22. 8, 4, 2, 10.
14, 4, 2, 22. अपक्षीयस्व, अपक्षीयमाणपक्ष 9, 2, 19. ÇĀKĪH. ÇR. 13, 29, 13.

— अपि, caus. तपयति vernichten, wegschaffen: विवाहा ज्ञातीस्स-
र्वानपि तपयति AV. 12, 3, 44. 51.

— अव wegschaffen, entfernen: तां तेन वावाक्षिणयात् LĀTJ. 4, 3, 16.
KAUÇ. 61.

— उप, उपक्षीय P. 6, 4, 59, Sch. — pass. abnehmen, aufgezehrt werden:
तासामन्नमुपक्षीयत TBr. 1, 1, 2, 5. उपक्षित स. अनुप^०; उपक्षीण P. 6, 4, 60,
Sch. erschöpft: सावित्रप्राज्ञावतकारिषेज्जोपक्षीणाभ्यापणात् KĀTJ. ÇR. 9,
3, 21. verschwunden SĪH. D. 17, 2.

— परि vernichten, ein Ende machen: परिक्षिणोत्प्रायुः BHĀG. P. 3, 8,
20. — pass. sich erschöpfen, herunterkommen, arm werden: परिक्षीयत
एवासौ धनी Hit. II, 91, v. l. परिक्षीण geschwunden, erschöpft, herunter-
gekommen, zu Grunde gegangen: कृत्तपक्षपरिक्षीणे गते ऽस्तं रजनीपतौ
KATHĀS. 23, 140. परिक्षीणमिवापगाम् R. 5, 21, 12. ऽधन SĪH. D. 45, 20.
यदा तु स्यात्परिक्षीणो वारुणेन बलेन वा M. 7, 172. अनर्देयं नाददीत परि-
क्षीणो ऽपि पार्थिवः 8, 170. JĀG. 2, 43. पारिक्षीणेषु कुरुषु MBh. 1, 1946.
BHĀG. P. 9, 22, 33. — R. 5, 21, 11. 21. BHART. 2, 37. PAÑKAT. II, 73. IV, 24.
Hit. 121, 18.

— प्र verderben, vernichten, erschöpfen: प्र तं क्षिणां पर्वते पादगृह्य
R. V. 10, 27, 4. (सप्तान्) प्र क्षिणीहि AV. 10, 3, 15. द्विभाग्युनमादाय प्र क्षि-
णात्यवर्त्या 12, 2, 35. 13, 3, 1. यज्ञो यजमानं प्रक्षिणीयात् ÇAT. Br. 1, 9, 2, 32.
कुम्भं प्रक्षीय 13, 8, 4. — pass. zu Grunde gehen, unkommen: प्रक्षीय-
माणेषु तेषु MBh. 2, 1468. partic. प्रक्षित s. अप्रक्षित; प्रक्षीण zerstört, ver-
nicht, verschwunden; von niedergeworfenen Bäumen AV. 10, 3, 15.
मघवन्दिषतः पश्य प्रक्षीणान् BHĀG. P. 6, 7, 23. प्रक्षीणाय Hit. 101, 5.
◦कामकर्मन् WIND. SANCARA 124. VEDĀNTAS. in BENF. Chr. 203, 21. RĪGĀ-
TAR. 5, 137. erschöpft, vermindert: बल सुच. 1, 32, 10. ऽबलमोस 117, 2.
प्रक्षीणमिदं देवदत्तस्य dies ist der Ort, wo Dev. umgekommen ist P. 6,
4, 60, Sch.

— वि versehren, mindern; des. — wollen: एते वै तं वित्तिपाति यं वि-
चितीयति ÇAT. Br. 9, 1, 2, 23. वित्ति heruntergekommen, elend R. 3, 79,
46. अविक्षीण unversehrt ÇAT. Br. 1, 6, 2, 14. 16. — Vgl. अविक्षित.

— सम् verderben, versehren: समूहं क्षिणाति AV. 3, 28, 2. — pass.
sich erschöpfen, zu Ende gehen, aufgerieben werden: श्रोत्रः संक्षीयते सुच.
1, 51, 3. अक्षरहः संक्षीयते जीवनम् BHART. 3, 44. एवं संक्षीयमाणाय मान-
वाः MBh. 3, 8749. DEV. 3, 20. — caus. schwinden —, zusammenfallen
machen: महार्णवः क्षयितोदकः R. 2, 48, 29. संक्षययति प्रूनम् सुच. 2, 134,
3. — Vgl. संक्षय.

4. क्षि f. 1) Wohnung. — 2) Gang. — 3) Vernichtung. — Vgl. 1. und 3. क्षि.
क्षिण (क्षिन्), क्षिणोति, क्षिणुते = 3. क्षि und auch daraus entstanden
DHĀTUP. 30, 4. VOP. 15, 1, 2.

क्षिन् (von 1. und 2. क्षि) adj. subst. wohnend, Bewohner; Beherrscher;
am Ende von compo.: अक्षरिन्^० Bewohner der Luft KĀND. UP. 2, 24, 9:
vgl. अच्युत^०, अप्सु^०, दिवि^०, पृथिवी^०, बन्धु^०, मही^०, लोक^०, व्रज^०,
स^०. सिन्धु^०.